अध्याय–प्रथम

भरत मुनि का परिचय

- 1.1 भरत
- 1.2 भरत मुनि का जन्म स्थल
- 1.3 नाट्यशास्त्रीय परम्परा
- 1.4 कृशाश्व और शिलालिन
- 1.5 भरत एक परिचय
- 1.6 सहिंताकाल और भरत
- 1.7 नाट्यशास्त्र और भरत
- 1.8 नाट्य प्रणेता भरत
- 1.9 नाट्यशास्त्र ग्रन्थ एवं भरत
- 1.10 नाट्यशास्त्र का रचना काल
- 1.11 नाट्यशास्त्र में वर्णन पूर्वाचार्यो और प्राचीन ग्रन्थ

प्रथम अध्याय

भरत मुनि का परिचय

भारत वर्ष सम्पूर्ण विश्व में अपनी सांस्कृतिक एवं परम्पराओं के लिए जाना जाता है। भारत ने विश्व को समय–समय पर मार्गदर्शित किया है। भारत में आदिकाल से ही प्रत्येक विद्याशाखा के लिए नवीन प्रयोग एवं संशोधन कार्य होते रहे हैं। जब विश्व गहन निंद्रा में था, तब भारत एक समृद्ध एवं उदय राष्ट्र था। इसलिए भारत विश्व गुरु के नाम से जाना जाता था। प्राचीन काल से ही भारत विज्ञान, तकनीकि–शास्त्र, मानव–शास्त्र, रसायन–शास्त्र, गणित, भूगोल, नक्षत्र–शास्त्र, जीवन–शास्त्र, तथा सौन्दर्य–शास्त्र जैसे अनेंक विषयों पर विश्व का मार्गदर्शन करता आ रहा है। जिस प्रकार भारत के ऋषि–मुनियों ने हर क्षेत्र में वैदिक आधारों पर नए आयामों के लिए सोच–विचार किया, उसी प्रकार संगीत, नृत्य, व नाट्य क्षेत्र में भी अपनी सांस्कृतिक धरोहर को श्रेष्ठ बनाने व मानव कल्याण हेतु संगीत शास्त्र की रचना की गई।

भारत में वेदों को अनादि कहा जाता है। मुख्य चार वेदों से कई उपनिषदों, सहिंता, वाङ्गमय, पुराणों आदि का शास्त्र, प्रकृति, मानव एंवम विश्व कल्याण में निहित भावनाओं के साथ वेदों का प्रचार–प्रसार हुआ और इन्हीं वेद शास्त्रों में से कई विद्या–शाखाओं का जन्म हुआ तथा इन्हीं के आधार पर संगीत शास्त्र की भूमिका प्रस्तुत हुई और शास्त्र का निर्माण हुआ। इसी वैदिक संगीत और भारत की प्राचीन कलाओं एवं संगीत को अपनी शब्द रूपी माला में पिरोकर "पं.भरत मुनि" ने नाट्यशास्त्र का निर्माण किया। यही नाट्यशास्त्र ही आगे चलकर 'पंचमवेद' के नाम से विख्यात हुआ तथा जिस प्रकार वेदों का महत्त्व है, उसी प्रकार संगीत के क्षेत्र में ''भरतकृत'' ''नाट्यशास्त्र'' को श्रेष्ठतम ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया गया है। विश्व में भारतीय संगीत, नृत्य एवं नाट्य श्रेष्ठतम माना जाता है।

संगीतजनों के लिए इसे प्रथम वेद कह सकते हैं। वर्तमान में भारतीय संगीत की महान परम्परा का स्त्रोत नाट्यशास्त्र है। निःसंदेह नाट्यशास्त्र के बिना संगीत, नृत्य, एवं नाट्य का विचार असंभव प्रतीत होता है। शोधार्थी का मानना है, कि नाट्यशास्त्र ही भारतीय संगीत की गंगोत्री है, अगर नाट्यशास्त्र नहीं होता, तो भारतीय संगीत की सुव्यवस्थित परंपरा कदाचित खण्डित ही रहती। शोधार्थी के मार्गदर्शक का मानना है किः–

नाट्यशास्त्र बिना ना गीतं च वाद्यं॥
न नाट्यशास्त्रय च बिना च नृत्यं॥
न नाट्यशास्त्रम विरहित च नाट्यम्॥
तन्नाट्यशास्त्रम जंगदेव (सं)गीतं॥

अर्थात् नाट्यशास्त्र को जाने बिना गीत, वाद्य, नृत्य एवं नाट्य असंभव सा प्रतीत होता है। नाट्यशास्त्र के कारण से ही जगत में संगीत है। नाट्यशास्त्र संगीत का एक विशाल शास्त्र है, जिसमें गीत, वाद्य, नृत्य, व नाटक सभी कलाओं का विस्तृत एवं सैद्धान्तिक विवरण दिया गया है। शोधार्थी के मार्गदर्शक यह भी मानते है कि :–

नाट्यशास्त्र यो नः जानाति॥
न स गायको नः वादकः॥
यो न जानाति शास्त्रमं यत॥
न स नर्तक नः नटः॥

अर्थात् जिसे नाट्यशास्त्र का ज्ञान नहीं है, वह न तो गायक है, न वादक, न नृत्यकार, और न ही नाट्यकार है। नाट्यशास्त्र में सम्पूर्ण संगीत, नृत्य, एवं नाट्य परंपरा की चर्चा की गई है। इसी कारण से नाट्यशास्त्र को संगीत के वेद की उपाधि देकर 'पंचमवेद' कहा गया है। 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता 'पं. भरत मुनि' के विषय में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है, फिर भी विषय की आवश्यकतानुसार पं. भरत मुनि और नाट्यशास्त्र को जानना एवं महसूस करना अति आवश्यक है।

1.1 भरत :– भरत शब्द भृ.(भरण या पोषण करना) धातु में अत्च् प्रत्यय लगने से बना है। जिसके सामान्य अर्थ इस प्रकार है– शबर, जुलाहा, खेत, अग्नि, आयुधजीविसंध, ऋत्विक तथा भरत का शिष्य।

भरत शब्द में अण प्रत्यय लगाकर इस प्रत्यय का लोप होने पर जो भरत शब्द बनेगा, उसका अर्थ भरत का शिष्य होगा। व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में भरत निम्नलिखित के लिए प्रयुक्त हुआ है–

1. दुष्यंत तथा शाकुंतला का पुत्र।
2. दशरथ का पुत्र।
3. जड़ भरत, जिनका उल्लेख पुराणों में मिलता है।
4. नाट्यशास्त्रकार भरत।

इसके अतिरिक्त भरत एक जातिवाचक संज्ञा भी है, तथा जातिवाचक संज्ञा के रूप में इसके कई अर्थ प्रचलन में रहे हैं। ऋग्वेद (3/33/11/12), ऐतरेय ब्राह्मण (8/4/23), शतपथ ब्राह्मण (13/5/8) आदि वैदिक ग्रंथों में भरत का जाति के रूप में उल्लेख किया गया है।[(1)] भरत के शब्दार्थ में संबन्धित एक श्लोक है–

भ्रकारो भावनैर्यूक्तों रेको रागेणमिश्रितः॥
तकारो तालमित्याहुर्भरतार्थ विचक्षण॥ [(2)]

"भ" अक्षर से भाव "र" से राग और "त" से ताल का अर्थ प्रतीत होता है, **अर्थात्** इन तीनों को जानने वाला भरत है। नाट्यशास्त्र की परंपरा में भरत का अर्थ नट या अभिनेता भी है। नाट्यशास्त्र के छत्तीसवें अध्याय में (श्लोक 35–36) भरत के सौ पुत्रों के लिए भरत शब्द प्रयुक्त है।

भावप्रकाश में भी नट समुदाय के लिए भरत संज्ञा प्रयुक्त है। शारदातनय ने भी इसका जातिवाचक संज्ञा के रूप में द्विविध अर्थ लिया है। एक अर्थ में नाट्य से जुड़े सभी लोगों को भरत कहा गया है, जिन्होंने मनु के समय नाट्य की अवतारणा इस धरती पर की। ब्रह्मा ने नाट्य के अवतरण के लिए एक ब्राह्मण को बुलाया और वह अपने शिष्यों के साथ उपस्थित हुआ। ब्रह्मा ने उन्हें कहा कि इस नाट्यवेद का भरण करो।

तनप्रवी नाट्यवेद्यम भरतेति पितामहः॥ [(3)]

उन ब्रह्माणों ने नाट्यवेद का अध्ययन किया तथा रस, भाव, अभिनय और प्रयोग के द्वारा पितामह को प्रसन्न कर लिया। उनसे प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उनसे कहा कि मैंने तुम लोगों से कहा था, कि इस नाट्यवेद का भरण करो, अतः तुम लोग भरत नाम से तीनों लोकों में विख्यात होंगें[(4)] तथा यह नाट्यवेद भी तुम लोगों के नाम से ख्याति को प्राप्त होगा, फिर मनु की प्रार्थना पर ही इन भरतों को भारत वर्ष भेजा तथा मनु की प्रार्थना पर ही इन भरतों ने ब्रह्मा के नाट्यवेद का सार निर्मित किया, जिसका एक ग्रन्थ बारह हजार श्लोकों का था और दूसरा छह हजार श्लोकों का। शारदातनय के अनुसार भरत का अन्य अर्थ अभिनेता था।

---

(1) त्रिपाठी राधावल्लभ / नाट्यशास्त्र–विश्वकोश / भाग–4 / पृ.12–17
(2) गर्ग लक्ष्मीनारायण / भरत–नाट्यशास्त्रम् भाग–1 / पृ०–38
(3) शारदातनय / भाव प्रकाशन / श्लोक–10/पृ0–285
(4) शारदातनय/भावप्रकाशन / पृ.286

नाट्य कर्म प्रयोक्ता है और शैलूष, भरत, भाव और नर ये पर्याय हैं, तथापि पारिभाषिक शब्द में शैलेष, नट, भाव आदि से भरत को शारदातनय ने पृथक रूप में लक्षित किया है, उनके अनुसार इनके लक्षण इस प्रकार हैंः–

भाषावार्णोपकनैर्णाना प्रकृतिसंम्भवं॥
वेषम् वयः कर्म चेष्टा विभद्र भरत उच्यते॥ (1)

नाट्यशास्त्र तथा परवर्ती ग्रंथों में नाट्यशास्त्रकार भरत मुनि के लिए भरत शब्द का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ है। विवरण के लिए इस कोष के प्रथम खंड में नाट्यशास्त्र का कृतित्व तथा भरत शब्द की लाक्षणिक व्याख्या दी गई है। वैदिक काल से भरत नामक विप्रकुल का उल्लेख तथा उसके नाट्य प्रयोग से संबंध होने की परम्परा प्राप्त होने लगती है, ऐसा याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्णित है।

1.2 भरत मुनि का जन्म स्थल

नाट्यशास्त्र विवरणों से भरत मुनि के भू–तल पर निवास–स्थान का भी यातिकिन्चित आभास मिल जाता है। नाट्यशास्त्र में हिमालय पर्वत पर अवस्थित भगवान शिव के आदेश पर तण्डू से तांडव का ज्ञान भरत मुनि ने प्राप्त किया तथा उन्हीं के समक्ष त्रिपुरदाह नामक डिम (रूपक) को प्रस्तुत भी किया।

नाट्यशास्त्र में हिमालय पर्वत के सहज एवं मनमोहक वर्णन के साथ शिव एवं पार्वती के तांडव तथा लास्य के विवरणों से शोधार्थी को यही प्रतीत होता है, कि भरत मुनि का आवास (आश्रम) हिमालय पर्वत के किसी क्षेत्र में रहा होगा। कुछ आलोचक हिमालय के अंतराल में प्राप्त होने वाले वृक्षों आदि के सूक्ष्म विवरणों को कश्मीर के अधिक निकट स्थापित करते हुए। भरत मुनि के निवास–स्थान को कश्मीर बताते हैं तथा यह तर्क भी देते हैं, कि इसी कारण प्रायः कश्मीर में ही नाट्यशास्त्र का परम्परागत अध्ययन सार्वाधिक होता रहा है, और इसी कारण से कश्मीरी विद्वानों में से ही जैसे भट्ट लोलट, श्री शंकुक, अभिनव गुप्तपाद आदि ने ही नाट्यशास्त्र की व्याख्याएं लिखी है।(2)

---

(1) शारदातनय / भावप्रकाशन / श्लोक–10 / पृ0–288
(2)शुक्ल शास्त्री, बाबूलाल(अनुवाद) / भरत–नाट्यशास्त्र / पृ0–19

1.3 नाट्यशास्त्रीय परम्परा

नाट्यकला विषय प्राप्त ग्रंथों में भरत का नाट्यशास्त्र सार्वाधिक प्राचीन तथा मान्यता प्राप्त ग्रन्थ माना जाता है, जैसे महान व्याकरण आचार्य पाणिनी मुनि द्वारा रचित अष्ठाध्याय की रचना काल से पूर्व भी व्याकरण शास्त्र के कई आचार्य थे। जिसका उल्लेख स्वयं पाणिनी मुनि ने किया है। वैसे ही भरत मुनि ने भी पूर्व आचार्यों का उल्लेख किया है। शोधार्थी सम्पूर्ण नाट्यशास्त्र के विषय में चर्चा न करते हुए नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल एवं वर्तमान में उनकी उपयोगिता का वर्णन अपने इस शोध प्रबंध में करेगा, किन्तु यहाँ शोध प्रबंध का मुख्य आधार बिंदु नाट्यशास्त्र होने के कारण भरत मुनि के परिचय के साथ भरत मुनि से पूर्व आचार्यों का विवेचन करना उचित समझा है। भरत मुनि से पूर्व आचार्यों को और उनके कार्यों को समझने से हम नाट्यशास्त्र एवं भरत मुनि कि पूर्व भूमिका को हम विस्तृत रूप में समझ पायेंगे।

1.4 कृशाश्व और शिलालिन

पाणिनी मुनि ने अष्ठाध्यायी में भी इन दोनों आचार्यों ”कृशाश्व और शिलालिन“ के नट सूत्रों का उल्लेख किया है।

पाराशर्य शिलालिभ्याम, भिक्षु, नट्सूत्रयोः॥
कर्मन्द दृ कृशाश्वदिनिः॥ [(1)]

यह वर्णन स्पष्ट करता है, कि यह दोनों भरत के पूर्वाचार्य थे। पं. सिलबालेवी और हिलेब्रांटे पाश्चात्य् विद्वानों ने भी इन दोनों आचार्यों के सूत्रों को नाट्य, सम्बन्धी शास्त्रीय ग्रंथों के रूप में स्वीकार किया है। इनके अलावा बेवर, काणें और किश आदि पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार ”कृशाश्व और शिलालिन“ के नटसूत्र नृत्य और अभिनय विद्या के महत्वपूर्ण ग्रन्थ रहें होंगें।[(2)] संभव है कि नाट्यशास्त्र में इन्ही सूत्रों को लिया गया है। पाणिनि के पश्चात अमरकोश में भी इन दोनों आचार्यों का उल्लेख मिलता है।[(3)] संभव है कि ”कृशाश्व और शिलालिन“ के नाट्यसूत्रों के नाट्यशास्त्र में विलीन होने के कारण महत्त्व न रहा हो। पाणिनी मुनि के उल्लेख से यह प्रतिपादित होता है कि भरत मुनि के पूर्व यह दो नाट्य आचार्य थे तथा इन्ही

---

(1) आचार्य पाणिनी/अष्ठाध्यायी /श्लोक–3 /पृ. 110,111
(2) Keth A.B. / The Sanskrit drama/ Page no.290.
(3)त्रिपाठी रामशंकर (संपादक)/अमर सिंह/अमरकोष/ पृ0–3

नाट्याचार्यों की प्रतिभा का मधुर फल उत्तराधिकारी के रूप में भरत मुनि को प्राप्त हुआ। नाट्यशास्त्र के विविध विषयों के विवेचन में अनेक आचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है, जिससे यह सिद्ध होता है, कि भरत मुनि के पूर्व भी नाट्य विद्याओं का प्रचलन था। नाट्यशास्त्र में स्वाति मुनि, नारद मुनि, ताण्डु, नन्दी, बृहस्पति आदि आचार्यों का उल्लेख मिलता है। स्वयं भरत मुनि ने भी अपने सतपुत्रों का वर्णन नाट्य की उत्पत्ति एवं नाट्य अवतार के प्रसंगों में किया है।

इनमें कई आचार्यों के रूप में नहीं किन्तु नाट्य प्रणेता और शास्त्र प्रणेता के रूप में उल्लेख स्वयं भरत मुनि ने किया है। उनके पुत्रों में कोहल, दत्तिल, अश्मचुट्ट नखकुट्ट, वादरायण और शतकरणी आदि का आचार्यों के रूप में वर्णन किया गया है।[(1)] वर्तमान नाट्यशास्त्र के कर्ता भरत मुनि और आदि भरत तथा वृद्ध भरत अलग–अलग हैं, ऐसा उल्लेख कई विद्वानों ने किया है। आदि भरत के विषय में कई टीकाकारों ने उल्लेख किया है। उदाहरण के लिए राघव भट्ट ने शन्कुंतल की टीका में मोहन घोष, डोलर राय मार्कंड आदि ने वृद्ध भरत को वर्तमान नाट्यशास्त्र कर्ता भरत से अलग माना है। रामकृष्ण कवि नाट्यशास्त्र की भूमिका में लिखते है कि दयोदस सहस्त्री सहिंता वृद्ध भरत की रचना है।[(2)]

नाट्यशास्त्र परंपरा में दरोहनी, व्यास, राहुल, कात्यायन गर्ग और कामदेव जैसे आचार्य भी थे। यह सारे नाट्यशास्त्रों के स्वंतंत्र ग्रंथों का उल्लेख कहीं न कहीं नाट्यशास्त्रों विषय आचार्यों में मिलता है, जैसे शारदातनय, भावप्रकाश, दशरूपक आदि ने दरोहिनी आचार्यों का उल्लेख ग्रंथों में मिलता है। व्यास का उल्लेख शारदातनय ने किया है। अभिनव भारती काव्य अनुशासन ग्रन्थ में राहुल आचार्य का उल्लेख मिलता है। कात्यायन आचार्य का नाम अभिनव भारती नाट्यशास्त्र, नाट्यलक्षण रत्नाकर कोष आदि नाट्याचर्यों के रूप में मिलता है। गर्ग आचार्यों का उल्लेख नाट्यलक्षण रत्नाकर कोष में मिलता है। कामदेव आचार्य का उल्लेख डा. डोलर राय मार्क्ड ने संस्कृत नाट्यशास्त्र की रूपरेखा ग्रन्थ में किया है।[(3)] इस तरह से भरत के पूर्व एवं समकालीन नाट्याचार्यों का वर्णन हमें कई प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। नाट्यशास्त्र में भी कई जगह पर उपरोक्त नाट्याचार्यों का वर्णन किया गया है।

---

(1)शुक्ल शास्त्री, बाबूलाल(अनुवाद) / भरत–नाट्यशास्त्र / अध्याय 1 / श्लोक–26–39
(2) कवि, रामकृष्ण / नाट्यशास्त्र भाग–1 / भूमिका / पृ.16
(3) पईजा के दिलीप कुमार / महानिबन्ध–नाट्यशास्त्र अने नृत्यकला / पृ.12

1.5 भरत एक परिचय

प्राचीन भारतीय संस्कृत साहित्य में एक से अधिक भरतों का उल्लेख मिलता है। इन सभी भरतों ने अपनी जीवन गरीमा, तेजस्विता और प्रभाव से अपने युग को तो प्राभावित किया ही है, तथा साथ ही अपनी कर्मनिष्ठा एवं बुद्धिमत्ता के लिए आज भी जाने जाते हैं। वर्तमान में भी उनकी विचारधारा को मान्यता प्राप्त है। प्राचीन साहित्य में उल्लिखित भरतों में से भारतीय कलाकोष के नाट्यशास्त्र के रचयिता किस भरत को मानना चाहिए, विषय में कई विचार–धाराएं मिलती हैं।

1.6 सहिंताकाल और भरत

सहिंता काल से लेकर ब्राह्मण काल तक के विशाल वैदिक साहित्यों में भरत का उल्लेख प्रसिद्ध वैदिक जाति के रूप में हुआ है। भरत जाति के 'दौष्यान्ति भरत' और 'शतानिक सत्राजित' नामक दो भरतवंशी राजाओं के अपूर्व पराक्रमों और यज्ञ कार्यों का वर्णन ग्रंथों में प्राप्त होता है।[(1)] ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथों में दोनों भरत वंशी राजाओं के राज्याभिषेक कथाओं का उल्लेख मिलता है।[(2)] ऐसा भी वर्णन है कि दौष्यान्ति भरत ने तो अपनी वीरता और बलप्रताप से समस्त जम्बुद्वीप को भारत वर्ष के रूप में विख्यात किया।[(3)] किन्तु इस भरत का नाट्यशास्त्र के साथ कोई सम्बन्ध हो यह कल्पना संभव नहीं है, परन्तु वैदिक कालीन भरतों का नाट्यशास्त्रकार भरत के सम्बन्ध देखने को मिलता है, जैसे ऋग्वेद में कई स्थानों पर भरत और भरत जन का उल्लेख मिलता है, वैसे ही नाट्यशास्त्र में भी नाट्य की उत्पत्ति और नाट्य प्रयोजन आदि विभिन्न सन्दर्भों में भरत मुनि के पुत्रों तथा नाट्य प्रयोक्ता सूत्रधार के रूप में नट, विदूषक और अन्य शिल्पियों का भरत जन के रूप में उल्लेख मिलता है।[(4)] इसके अलावा भरत शब्द का प्रयोग याज्ञवल्क्य स्मृति सहिंता में भी मिलता है। संभवतः–

आज्ञापितो विदित्वाह नाट्यवेद पितामहात्॥
पुत्रान्ध्यापयामास प्रयोगन्चापि तत्वतः॥

---

(1) ऋग्वेद / मंडल–3 / सूक्त–33 / मन्त्र–12
(2) एतरेय ब्राहम्ण / 8 / 4 / 23
(3) सूर्यकांत / वैदिककोष / पृ0–350–351
(4)शुक्ल शास्त्री, बाबूलाल(अनुवाद) / भरत–नाट्यशास्त्र / अध्याय–1 / श्लोक–16,36,66,69

1.7 नाट्यशास्त्र और भरत

नाट्यशास्त्र कर्ता भरत के जीवन के विषय में नाट्यशास्त्र में नाट्योत्पत्ति, नाट्यमण्डप और नाट्यावतार नामक अध्यायों में उल्लेख मिलता है। इस अध्याय के अनुसार भरत को नाट्यवेद का ज्ञान भी ब्रह्मा जी से प्राप्त हुआ था।[(1)] स्वयं भरत ने अपने शतपुत्रों को नाट्यवेद की शिक्षा दी थी। भरत के पुत्रों में कोहल, दत्तिल, वात्स्य और शांडिल्य आचार्य के रूप में प्रसिद्ध हैं, तथा साथ ही नाट्यशास्त्र के प्रणेता के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।[(2)] नाट्य प्रयोगों के प्रथम प्रवर्तक भरत और भरतों का जीवन भयंकर युद्ध, रक्तपात, कामहत्या और अभिशाप से युक्त रहा है। महेंद्विजय उत्सव में दानवों की पराजय की कथा वर्णित है। इस कथा को देखकर दानव क्रोधित हो उठे और उन्होंने भवनों का संहार किया और रंगमंच के प्रणेताओं पर घातक प्रहार किया, परन्तु देवताओं के आशीर्वाद होने के कारण रंगकर्मी निश्चिन्त थे। एक कथा के अनुसार भरत पुत्रों द्वारा एक अवसर पर स्वर्ग लोक में नाट्य प्रस्तुत किया गया और उस नाट्य प्रस्तुति में ऋषियों के उपहास को अनुकरण के रूप में प्रस्तुत किया। जिससे ऋषि–मुनि क्रोधित हो गए और भरत पुत्रों को अभिशाप दिया और भरतमुनि के आदेशानुसार अभिशापित भरत पुत्रों ने भूमि पर आकर स्वर्गलोक के नाट्य कार्य का प्रयोग भूमि पर प्रदर्शित किया और श्राप से मुक्ति पाई।

गम्यंता सहितैः भूमि प्रयोक्तुं नाट्यमेक्च॥
करिन्यामि च शापते अस्मिन सम्यक प्रयोजिते॥ [(3)]

इस तरह से भरतमुनि और पुत्रों द्वारा नाट्य उत्पत्ति नाट्य प्रयोग एवं नाट्य मंडप की रचना का श्रेय नाट्यशास्त्र के अनुसार भरत जन को जाता है।

''यथा ही भरतों वर्णे वर्णपति आत्मनस्तनु''॥ [(4)]

संस्कृत नाटककारों तथा परवर्ती शास्त्रकारों ने भारत को एक व्यक्ति विशेष के रूप में अधिक उल्लेखित किया है। यह भरत नाट्यशास्त्र के कर्ता तथा स्वयं महान नाटक प्रयोक्ता भी हैं। कालिदास के विक्रमोर्यशीयम में भरत स्वर्ग में इंद्र आदि देवों के सामने लक्ष्मी स्वयंवर नाटक

---

(1)अभिनव गुप्त/अभिनव भारती टीका भरत–नाट्यशास्त्र/अध्याय–1/55–56
(2)शुक्ल शास्त्री, बाबूलाल(अनुवाद)/भरत–नाट्यशास्त्र/पृ.36,65
(3)शुक्ल शास्त्री, बाबूलाल(अनुवाद)/भरत–नाट्यशास्त्र/अध्याय–36/पृ0–63
(4) विद्यारनवा, रायबहादुर चंद्र/याज्ञवल्क्य–याज्ञवल्क्यस्मृति/3,162

कर आते हैं तथा उसमें उर्वशी को अपनी भूमिका का निर्वाह अच्छी तरह ना कर पाने पर श्राप दे डालते हैं। भवभूति के उत्तर रामचरित के अंतिम अंक में रामायण का नाट्य प्रयोग भरत कराते हैं। कवि भवभूति ने इन्हें तौर्यत्रिक सूत्रधार कहा है। राजशेखर के बाल रामायण में सीता स्वयंवर नाटक रावण की राज्यसभा में खेला जाता है। जिसके प्रयोक्ता भरत हैं और स्थांपक कोहल। मुनि रामभद्र के प्रबुद्ध रोहिणेय में डाकू रोहिणेय के सम्मुख अचार्य भरत गंधर्व तथा अप्सराओं की भूमिका में अपने नट–नाटियों को उतारकर स्वर्ग के दृश्य का भ्रम जाल रखते हैं।[(1)]

नाट्यशास्त्र के ही पहले, चौथे तथा अंतिम अध्याय में भरत मुनि ने अपने आप को नाट्यशास्त्र का प्रवक्ता बताते हुए, भू–लोक में नाट्य के अवतरण में अपनी भूमिका की चर्चा की है। इसके साथ ही उन्होंनें अपने आप को महेंद्र विजयोत्सव व इन्द्र्माह के अवसर पर समुद्रमंथन समयसार का प्रयोक्ता भी निरूपित किया है और तदोपरान्त अपने दारा त्रिपुरदाह नामक डिम के प्रयोग करने की भी चर्चा की है।[(2)]

1.8 नाट्य प्रणेता भरत

नाट्यशास्त्र में जिस तरह के भरत के जीवन का उल्लेख मिलता है, उससे यह अनुमान लगा सकते हैं कि भरत और भरत वंशियों ने नाट्यकला के प्रयोग, विकास और संरक्षण के लिए कठिन संघर्ष, युद्ध और अपमानित होकर भी धरती एवं स्वर्ग लोक में नाट्य विधा का प्रचार प्रसार किया। भू–लोक पर मनुष्य जीवन दुख और शोक में था, उन्होंने ललित कलाओं के प्रयोग से मनुष्य जीवन में सुख और शांति की शीतलता की वर्षा की जिससे मनुष्य जीवन में आनंद तत्व का विकास हुआ और सामाजिक परंपरा को वेग मिला। नाट्यशास्त्र के परिवर्ती नाटकों एवं शास्त्रीय ग्रंथों में भरत का उल्लेख नाट्यशास्त्रकार, नाट्याचार्य और नाट्यप्रणेता के रूप में मिलता है। विक्रमोशीयम में कालिदास की कथानुसार भरत के स्वर्ग लोक में भी अष्टरसाश्रित 'लक्ष्मी स्वयंवर' नाट्य का प्रयोग किया था और उन्होंने उत्तर रामचरित में भी नाट्य की परिकल्पना करते हुए भरत का तौर्यत्रिक सूत्रधार के रूप में स्मरण किया था।[(3)]

---

(1) त्रिपाठी, राधावल्लभ / नाट्यशास्त्र विश्वकोष / पृ0–12–17
(2) तुलसीदास / उत्तर रामचरित्र / अध्याय–4
(3)पईजा के दिलीप कुमार / महानिबंद–भरत मुनि नाट्यशास्त्र मां नाट्य एवं नृत्यकला / पृ0–20

त चं स्वर हस्तलिखित व्यसृजदभगवतो भरतस्य
तौर्यत्रिक – सूत्रधारस्य ॥
रस किल भगवान भरतस्तमरसरोभिः प्रयोजिष्यतीति ॥

दामोदर गुप्त ने अपने ग्रन्थ कुटुनीमत में भी भरत का उल्लेख नाट्यप्रणेता के रूप में किया है। वस्तुतः कालिदास से लेकर अनेक ग्रंथकारों ने प्रत्यक्ष परिचय में भरत और नाट्यशास्त्र के प्रयोगों का वर्णन किया है।

1.9 नाट्यशास्त्र ग्रन्थ एवं भरत

दशरूपक, अभिनवदर्पण, भावप्रकाशन, नाट्यदर्पण, अभिनवभारती, रसार्णव सुधाकर, नाट्यलक्षण रत्नकोश व संगीत रत्नाकर आदि संगीत नृत्य एवं नाट्यशास्त्र ग्रंथों में भरत और उनके नाट्यशास्त्र का उल्लेख मिलता है। इन सभी ग्रंथों के अनुसार भरतमुनि नाट्यशास्त्र के प्रणेता भी है और नाट्याचारी थे। दशरूपक ग्रंथ में भरत नाट्यशास्त्र के प्रणेता है[(1)], ऐसा लिखा गया है और इस ग्रंथ पर नाट्यशास्त्र का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। नाट्यदर्पण में यह बताया गया है कि नाट्याचारियों में सर्वाधिक प्रमाणभूत विद्वान भरत हैं।[(2)] पंडित सागरनंदी रचित नाट्यलक्षण रत्नकोश में आचार्यों में भरत मुख्य आचार्य हैं और उनका ग्रंथ नाट्यशास्त्र ब्रह्मांड की तरह विशाल एवं आगाध है। भाव प्रकाशन ग्रंथ में भरत के विषय में लिखा है कि–

नाट्यवेदमिदं यस्माद भारतेति मयोदितम ॥
तस्माद भरतनामनों भविष्ययजगत्रये ॥ [(3)]

शारदातनय ने अपने ग्रंथ भावप्रकाशन में कहा है, कि भरत एक ही नहीं बल्कि अनेक थे। नाट्यशास्त्र के प्रणेताओं को भरत कहते थे, ऐसी उनकी वेदना है। भावप्रकाशन ग्रंथ के अभ्यास से ऐसा प्रतीत होता है कि भरत एक व्यक्ति ना होकर भरत नामक जाति विद्यमान रही होगी। इस ग्रंथ में 'भरत' आदि बहुवचन युक्त शब्द का प्रयोग कई बार मिलता है। भावप्रकाशन के इस विवेचन से कई भरत होने का अनुमान ग्रंथकार ने किया है। यह भी प्रतीत होता है कि कई आधुनिक विद्वानों ने भी भरत एक व्यक्ति ना होकर कई भरत है, ऐसा

---

(1) आचार्य रामचन्द्र और आचार्य गुणचन्द्र / दशरूपक / अध्याय–1 / श्लोक–2
(2)नागेन्द्र(सम्पादक) / धनंजय / नाट्यदर्पण / पृष्ठ–26
(3)शारदातनय / भावप्रकाशन / श्लोक–25 / पृ.284

माना है। जातिवाचक अर्थ में भरत शब्द की व्युत्पत्ति व नाट्योत्पत्ति की कथा भावप्रकाशन में इस प्रकार बताई गई है– मनु ने इस पृथ्वी का भार हल्का करने के लिए अपने पिता सूर्य से प्रार्थना की। सूर्य ने बताया कि प्राचीन काल में ब्रह्मा ने शिव के द्वारा अज्ञाप्त नंदिकेश्वर से नाट्यवेद प्राप्त किया था और एक मुनि को उसके प्रयोग की अनुमति थी। उस मुनि तथा उसकी मंडली के नाट्यप्रयोग से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उन्हें वर देते हुए कहा था, चूंकि मैंने तुम लोगों को आदेश दिया था, कि तुम नाट्यवेद करो इसलिए तुम भरत नाम से तीनों लोकों में प्रख्यात होंगे तथा यह नाट्यवेद भी तुम लोगों के नाम से जाना जाएगा।**(1)** शारदातनय के अनुसार इन्ही भरतों में से एक ने नाट्यवेद का संग्रह बारह हजार श्लोकों में और दूसरे ने छः हजार श्लोकों में निर्मित किया। नाट्यशास्त्र या अन्य ग्रंथों जहाँ भरत शब्द केवल व्यक्ति विशेष के अर्थ में आया है, वहां सर्वत्र आशय भरत मुनि(षटसाहस्त्रिकार या सूत्रकार भरत) से ही है। जातिवाचक संज्ञा के रूप में भरत शब्द नाट्य प्रयोक्ताओं के सम्पूर्ण समुदाय को घोषित करता है। जिनमें शत्रुधार नटी–नट, पारिपाशिर्वक, विदूषक शैलूष, भाव आदि उनके विशेष कार्यों के अनुसार विभिन्न श्रेणियां बनती है।**(2)** आंधर्गायार्थ (आर.वी जागीरदार) का मत है कि भरत एक वैदिक कालीन जाति का ही मूल नाम है।**(3)** नाट्यशास्त्र की रचना तथा प्रयोग से जुड़े लोगों का सामूहिक नाम भी भरत है और भरत जाति का इस समुदाय से सम्बन्ध रहा है। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर आचार्य अभिनव कहते हैं कि नाट्यशास्त्र की रचना भरत मुनि द्वारा ही हुई है, वंश परम्परा के अनेक भरतों से नहीं। अभिनव ने अपने पूर्व आचार्यों की भरत के सन्दर्भ में जो मान्यताएं थी। उनका खंडन करते हुए लिखा है कि भरत एक ही है और उन्होंने ही नाट्यशास्त्र की रचना की। अभिनव यह मानते है कि सर्वप्रथम नाट्यशास्त्र की रचना सदाशिव भगवान् द्वारा हुई। तत्पश्चात ब्रम्हाजी के द्वारा नाट्यशास्त्र को अंतिम रूप देने का कार्य भरत मुनि को सौंपा गया।

एतेन सदाशिव ब्रम्हा भरत मत त्रय विवेचनेन
ब्रम्हमत सारताप्रतिपाधनाय मत त्रयी सारासार विवेचनं
तद् ग्रन्थ प्राक्षेपेण विहित्मिंद शास्त्रम॥
न तू मुनिविर चितमिति यदाहुः नास्ति कोपा ध्यायास्त॥ (4)

---

(1) शारदातनय / भावप्रकाशन / श्लोक–86 / पृ.284
(2) शारदातनय / भावप्रकाशन / पृ.287–88
(3) Keth A.B./The Sanskrit drama/ Page no.27
(1) अभिनव गुप्त / अभिनव भारती टीका भरत–नाट्यशास्त्र / भाग–1 / पृ.1।

अभिनवगुप्त के अनुसार भरत ने ब्रम्हाजी से नाट्यवेद की शिक्षा ग्रहण की और नाट्यशास्त्र की रचना की। भरत मुनि ने नाट्यप्रयोग अपने पुत्रों की सहायता से किए किन्तु नाट्यशास्त्र रचना स्वयं भरत ने ही की। शोधार्थी द्वारा भरतमुनि के परिचय के सन्दर्भ ग्रंथों के अवलोकन के पश्चात् प्रतीत होता है कि भरतमुनि नाट्यवेद के निर्माता थे। भरतमुनि ने ही ब्रम्हाजी के आशीर्वाद से नाट्यशास्त्र की रचना की। शास्त्रों में भरतमुनि विषय में अलग–अलग मत हैं। कुछ विद्वान अनेक भरतों की चर्चा करते हैं, तो कुछ शास्त्रकारों ने भरत जाति का उल्लेख करके वंश परम्परा के आधार पर नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति हुई है, ऐसा माना हैं। किन्तु सारे ग्रंथों एंवम् भरत मुनि के परवर्ती शास्त्रकारों के शास्त्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भरत एक ही थे और उन्होंने ही नाट्यशास्त्र की रचना की।

नाट्यशास्त्रीय ग्रंथों के निर्माण की मूर्त परम्परा का परावर्तन आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र से ही हुआ। आचार्य भरत के सम्बन्ध में सभी विद्वान एक मत से अभिमत है, कि भरत एक महान प्रतिभाशाली और युग विधायक महापुरुष हुए है। उनकी गणना महामुनि बाल्मीकि और महामुनि व्यास की श्रेणी में की गई है। आचार्य भरत का व्यक्तित्व साहित्य में सर्वत्र व्याप्त है। नाट्यशास्त्र के निर्माता के रूप में उनका नाम विश्व साहित्य में अमर हो चुका है। वे बाल्मीकि और व्यास के सामान परम्परा के प्रतिभाशाली आचार्य थे, जो ऋषिकल्प होते हुए भी लोक जीवन में घुलमिल गए थे। ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर आचार्य भरत के नाम और स्थिति काल के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न सामने आते हैं। उनके भरत नाम के सम्बन्ध में ही पहली जिज्ञासा उत्पन्न होती है। कुछ विद्वानों को अभिमत है कि भरत किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर एक परम्परा, सम्प्रदाय या वंशशाखा का नाम है। वैदिक युग में कृशाशव और शिलालिन द्वारा जिन भिक्षसूत्रों तथा नटसूत्रों का निर्माण हुआ, उनमें नटसूत्रों के निर्माता शिलालिन की जो शाखा परंपरा आगे बढ़ी, उसी को बाद में भरत कहा जाने लगा। भरत नाम के संबध में इस भ्रान्ति के अन्य भी कई कारण हैं। कुछ ग्रंथों में नट के पर्याय के रूप में भरत शब्द का उल्लेख हुआ है। अमरसिंह के अमरकोश में नट शब्द के समानार्थक भरत शब्द का प्रयोग हुआ है। भरत की उक्त परम्परा के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का अभिमत है, कि उनके द्वारा जिन नटसूत्रों का निर्माण हुआ, उनके अभिनेता नटों को ही बाद में भरत कहा गया और भरतों या नटों का शास्त्र होने के कारण उसे भरत नाट्यशास्त्र कहा गया। नाट्यशास्त्र और उनके परवर्ती ग्रंथों के अध्ययन से इस भ्रान्ति का पूरी तरह से

निराकरण हो जाता है। इन उल्लेखों के आधार पर अधिक उपयुक्त यह जान पड़ता है, कि भरत किसी सम्प्रदाय, शाखा या चरण का नाम न होकर व्यक्ति विशेष का ही नाम था। उनके बाद उनकी परम्परा को आगे बढाने वाले उनके सौ पुत्रों, शिष्यों द्वारा उन्ही के नाम से उनका प्रचलन हुआ। नाट्यशास्त्र की परम्परा में आचार्य भरत के नाम की वस्तुस्थिति वैसी ही उलझी हुई प्रतीत होती है, जैसी पुराणों की परम्परा में व्यास की। वेदों के व्याख्याता और पुराणों के निर्माता के रूप में अनेक ऋषियों को वेदव्यास के नाम से जाना गया। इस प्रकार वेदव्यास का उल्लेख उपाधि तथा सम्प्रदाय के रूप में भी देखने को मिलता है और व्यक्तिगत नाम के रूप में भी इसी प्रकार भरत का नाम व्यक्ति विशेष के रूप में और उनके द्वारा प्रवर्तित नाट्य–परम्परा के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। व्यक्ति विशेष के लिए भरत शब्द का प्रयोग अनेक परवर्ती ग्रंथों में देखने को मिलता है।

इस प्रकार के ग्रंथों में मुख्य रूप से महाकवि कालिदास के विक्रमोर्वशीय और नाटककार भवभूति के उत्तररामचरित का नाम उल्लेखनीय है। कालिदास के विक्रमोर्वशीय के एक सन्दर्भ में नेपथ्य में देवदूत द्वारा कहलाया हैं कि ‘‘चित्रलेखा उर्वशी को शीघ्र ले जाओ'', भरतमुनि आप लोगों को आठ रसों से युक्त जो नाटक का प्रशिक्षण दिया है, वह भगवान इंद्र और लोकपाल उसका सुन्दर अभिनय देखना चाहते हैं। इस प्रकार भरत को नट का पर्याय मान कर जो संदेह किया गया है और उसकी पुष्टि के लिए जो प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं, वे इतने पुष्ट एवं आधारित नहीं हैं, जिनको अंतिम रूप में स्वीकार किया जा सके। अभिनव भारती के अतिरिक्त आचार्य नंदिकेश्वर के अभिनव रागदर्पण में भरत नाम की वस्तुस्थिति को अधिक स्पष्टता से व्यक्त किया गया है। नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति और परंपरा के सम्बन्ध में आचार्य नंदिकेश्वर ने लिखा है कि यह नाट्यवेद प्रजापति ब्रम्हा से भरत को मिला और भरत ने अप्सराओं तथा गन्धर्वों के सहयोग से सर्वप्रथम उसका प्रयोग नटराज शंकर के सामने प्रस्तुत किया। तदांतर मुनियों (भरत शिष्यों) द्वारा यह नाट्यवेद मानवीय सृष्टि में प्रचलित हुआ। उसके बाद परंपरा द्वारा यह नाट्यकला निरंतर आगे बढती रही। अभिनय दर्पण में उल्लिखित भरत शब्द स्पष्टः व्यक्ति बोधक है।

1.10 नाट्यशास्त्र का रचना काल

नाट्यशास्त्र का काल निर्धारण का विचार एक जटिल एवं विवादस्पद चर्चा का विषय है। अनेकों दृष्टि से नाट्यशास्त्र की स्थिति महाभारत के जैसी ही है। समय–समय पर महाभारत

के विषय में संशोधन होता गया, वैसी ही स्थिति नाट्यशास्त्र के सदंर्भ में है। नाट्यशास्त्र के रचना काल के विषय में कई मत–मतांतर पाए जाते है। आर्यों की महत्वपूर्ण भूमिका दर्शन हमें ऋग्वेद से होता है, यह आर्यों की कृतियों और उनकी संस्कृति में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अंशों का दर्शन मिलता अर्थात् की आर्यों नाट्यशास्त्र और भरतमुनि से परिचित थे। अश्वघोष और वास ई० सन् के प्रवात काल अर्थात् प्रथम शताब्दी से ही भरत के नाट्यशास्त्र के प्रभाव में थे। कालिदास पूर्व दूसरी–तीसरी सदी में पतंजलि एवं महाकश्य कशवद एवं वलिवंदन नामक नाटकों का और उनके प्रयोगों का उल्लेख किया है।**(1)** यह लुप्त प्राचीन नाट्य कृतियों आगर प्राप्त होती है, तो नाट्य शास्त्र के साथ उनकी तुलना करके नाट्यशास्त्र के समय निर्धारण में सहायता मिली। फिर भी दूसरी सदी से 4 सदी में उपलब्ध विविध ललित साहित्य कृतियों भरत और नाट्यशास्त्र स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। फिर भी समय निर्धारण का कार्य कठिन प्रतीत होता है। नाट्यशास्त्र के काल निर्धारण हेतु कुछ आन्तरिक एवं बाह्य उल्लेखों को समझना और उसकी एवं उसकी जानकारी प्राप्त करना अति आवश्यक है। आन्तरिक सम्बन्ध हेतु स्वयं नाट्यशास्त्र को ही समझना आवश्यक है। नाट्यशास्त्र में ही वर्णित विविध अध्यायों में लिखी गई नाट्य उत्पत्ति पूर्वरंग नाट्यवतानिक के प्रसंगों अनेक वेदक एवं प्रायोगिक देवी देवताओं का स्मरण प्राकृतिक तत्वों गंधर्व, अप्सराओं, नाट्यवंगन, नाट्यकुमारी आदि का अध्ययन से नाट्यशास्त्र का काल निर्धारण कर सकते हैं।

1.10.1 महाग्रामणी (गणेश)

महाग्रामणी शब्द का उल्लेख नाट्यशास्त्र में मिलता है। यह शब्द गयम देवता वाचक है। आचार्य अभिनव गुप्त इस शब्द को 'गणपति' माना है, किन्तु महाग्रामणी (गणेश) शब्द नाट्यशास्त्र की प्राचीनता का समर्थन नहीं करता क्योंकि गणेश हिन्दू सभ्यता में देव के रूप में परवर्ती काल से प्रसिद्ध है। इस शब्द से नाट्यशास्त्र के काल निर्धारण में कोई उपयोगिता नहीं रहेगी।

1.10.2 प्राचीन जातियों और जनपद

नाट्यशास्त्र में विभिन्न जातियों एवं वर्गों के लिए अलग–अलग शरीर वर्ण का विद्वान है, जैसी किरात, वर्वर, आंध्र और द्रमिल काशी कोशल, पुल्लिंद और दक्षिण आदि वर्ण का विद्वान

---

(1) पईजा के दिलीप कुमार / महानिबंध–भरत मुनि नाट्यशास्त्र मां नाट्य एवं नृत्यकला / पृ0–26

है, किन्तु आंध्र, द्रुमिल, किरात व वर्वर का वर्णन "आपस्ंटाषधर्मसूत्र" में लिखा गया है, इस ग्रन्थ के लेखक तमिल थे। अनुमानित तीसरी शताब्दी के आस–पास यह ग्रन्थ लिखा गया है। नाट्यशास्त्र में आंध्र द्रुमिलनों किरातो और वर्वर जातियों का उल्लेख हुआ है। इससे यह कल्पना कर सकते है, कि नाट्यशास्त्र की रचना उस समय हुए होगी, जब आंध्र और द्रुमिल(द्रविण) जनपदों का कुछ भाग पूर्ण सभ्य नहीं हुआ होगा अर्थात् यह समय ई० सन पूर्व का मान सकते है।**(1)** अर्थात् कि तीसरी शताब्दी से पहले नाट्यशास्त्र लिखा गया हो ऐसा अनुमान कर सकते है।

1.10.3 नाट्यशास्त्र की प्राकृत एवं संस्कृत भाषा

नाट्यशास्त्र में दो भाषाओं का प्रयोग हुआ है। संस्कृत और प्राकृत भाषा के विवेचन क्रम में स्वर वर्ण और उच्चारण आदि का विश्लेषण करने से भरत कालीन प्राकृत भाषा का स्वरूप प्राप्त होता है। प्राकृत भाषा का स्वरूप विभिन्न प्रसंगों पर प्राप्त होता है, वह अश्वघोष रचित सारीपुत्र प्रकरण में वर्णित प्राकृत भाषा की अपेक्षा नाट्यशास्त्र में विक्षित देखने को मिलती है। श्रीमान मनमोहन घोष में प्रतिपादित किया है, कि अश्वघोष कि प्राकृत भाषा मध्यवर्ती प्रतीत होती है। इस आधार पर नाट्यशास्त्र का रचना काल चौथी सदी से पहले और पहली सदी के बाद मान सकते है। अश्वघोष ने अपनी सारीपुत्र प्रकरण में नाट्यशिल्प प्रयोग और नाट्यशास्त्र के दशरूपक विवरण के प्रकरण में जो नियमों का वर्णन किया है, वो दोनों एक से है। इससे प्रतीत होता है, कि प्राकृत भाषा के आधार पर पहली सदी किन्तु नाट्यशिल्प के संदर्वो के आधार पर पहली सदी के पूर्व नाट्यशास्त्र की रचना हुई होगी नाट्यशास्त्र में नांदी भरत वाक्य एवं छन्दो विद्वान आदि के विवरण में संस्कृत भाषा का उपयोग हुआ है यह संस्कृत भाषा का प्रवह सरल एवं प्राचीनतम है। इस तथ्य को सोचते हुए 'P.RENARD' ने नाट्यशास्त्र का रचना काल ई० सन के प्रभात काल में माना है अर्थात कि प्रथम व द्वितीय सदी माना है।**(2)**

1.10.4 नाट्यशास्त्र में प्राचीन काव्यशास्त्र की रुपरेखा

नाट्यशास्त्र में अलंकार, छन्द, गुण–दोष रस आदि का विवेचन किया गया है। यह भवत नाट्यशास्त्र के काल निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण है।

---

(1) Kane Prof. P.V. / History Of Dharam Shaster Vol.1/page no.45
(2) पईजा के दिलीप कुमार / महानिबंद–भरत मुनि नाट्यशास्त्र मां नाट्य एवं नृत्यकला–पृ0–27

1.10.4.1 अलंकार– वाचिक अभिनय के प्रसंगों में नाट्यशास्त्र में उपमा, रुपक, दीपक, यमक यह चार अलंकारों का उल्लेख मिलता है। छठी शताब्दी के आचार्य वामहे ने अपने ग्रन्थ में 35 अलंकारो का वर्णन किया है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में 17 अलंकारों का वर्णन है। यह सारे छठी शताब्दीं के आस–पास के ग्रंथों में अलंकारों का विकास देखने को मिलता है। हम यह अनुमान कर सकते है, कि छठी शताब्दी हुए आचार्य वहम ने जो अलंकारों कि संख्या बताई है, वो नाट्यशास्त्र में बताये गई, वह अलंकारों की संख्या से कम है। अगर भरत मुनि का नाट्यशास्त्र छठीं शताब्दी के बाद लिखा गया, तो अलंकारों की संख्या से ज्यादा हो सकती थी। इससे यह अनुमान लगया हैं, कि छठी शताब्दी से पहले नाट्यशास्त्र का लेखन हुआ होगा।[(1)]

1.10.4.2 छन्द– नाट्यशास्त्र में अलंकारों की अपेक्षा छन्दों का विवेचन विस्तार से हुआ है, सम, आदिसम, विसम यह तीन वेदों के अनुसार पचास से ज्यादा छन्दों का विवेचन हुआ। छन्द शास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ पिंगल को माना जाता है। उससे पहले नाट्यशास्त्र में छन्द का वर्णन मिलता है, अपितु नाट्यशास्त्र के छन्द प्राचीनता का भी अहसास होता है, एक बात यह है, कि अलंकारों से ज्यादा छन्द नाट्यशास्त्र में मिलता इससे सिद्ध होता है कि चार अलंकारों द्वारा ही नाट्यशास्त्र की रचना हुई, अगर अलंकारो की संख्या ज्यादा होती हो, जिस तरह से छन्दों का प्रयोग हुआ है। उसी तरह से अलंकारों का भी प्रयोग प्राप्त होते है। यह सारे तथ्यों से यह प्रतीत होता है, कि नाट्यशास्त्र में वर्णित छन्द प्राचीन है और छन्दों का अधिक प्रचलन हुआ। उससे पूर्व नाट्यशास्त्र में छन्दों का उपयोग हुआ। यही बात नाट्यशास्त्र की प्राचीनता को दर्शाता है।

1.10.5 प्राचीन शिलालेखों और नाट्यशास्त्र

नाट्यशास्त्र में अनेक परिभाषिक शब्दों देश और जातियों के नामों का प्रयोग हुआ। यही परिभाषिक का समानलेख प्राचीन भारतीय शिलालिखों में भी पाया जाता है। पश्चात् विद्वान प्रो० शीलवालेवी भारतीय प्राचीन शिलालेखों में वर्णित कई शब्दों के आधार पर नाट्यशास्त्र के समय का निर्धारण करने का प्रयास किया है। गुजरात स्थित जूनागढ़ में शक्–क्षत्रिय रूद्रदमन शिलालेख महत्वपूर्ण है। इस शिलालेख में वर्णित कई शब्दों का उल्लेख नाट्यशास्त्र में भी होता है। जैसे कि–

---

(1) पईजा के दिलीप कुमार / महानिबंद–भरत मुनि नाट्यशास्त्र मां नाट्य एवं नृत्यकला / पृ0–28

- सम्बोधन वाचक शब्द– स्वामी, शुगृहित नामन और भद्रमुख
- पारिभाषिक शब्द– सोष्ठव, गंधर्व, नियुद्ध
- गाय और ब्रह्मंप्रति

उपर्युक्त शब्द नाट्यशास्त्र और शिलालेखों में समान रूप में व्यवहार में लिए गए पुलोंमयी शिलालेख शक, यवन, और पौहल आदि आक्रमणकारी जातियों का उल्लेख जिस क्रम में है, वही क्रम में नाट्यशास्त्र में भी वर्णित है। प्रो० शिलवलेवी ने प्रतिपादित किया है, कि नाट्यशास्त्र में वर्णित शब्दों के लिए यह शिलालेख ऋणी है, इसके आधार पर नाट्यशास्त्र का रचनाकाल दूसरी शताब्दीं बाद हुआ होगा, किन्तु सम्भव है कि शिलालेख से पहले यह शब्दों नाट्यशास्त्र में वर्णित हो तब नाट्यशास्त्र का रचना काल दूसरी शताब्दी से पहले मान सकते है।[(1)] सारी धारणाओं से यह निष्कर्ष निकलता है, कि तीसरी शताब्दी पूर्व भरत के नाम से एक नाट्यशास्त्र निश्चित रूप से लोकप्रिय हो चुका था। अश्वघोष रचनाओं पर नाट्यशास्त्र का प्रभाव देखने को मिलता है, अश्वघोष ने अपनी कृति सारीपुत्र प्रकरण का समय प्रथम शताब्दी का माना जाता है और अश्वघोष की रचनाओं में नाट्यशास्त्र का प्रभाव देखने को मिलता है अर्थात् नाट्यशास्त्र की रचना प्रथम शताब्दी से पूर्व या प्रथम शताब्दी के पूर्वार्ध प्रतीत होता है। शोधार्थी द्वारा सारे ग्रंथों एवं तार्किक अभ्यास से प्रतीत होता है। नाट्यशास्त्र प्राचीन ग्रन्थ है, एवं उसे पहली शतब्दी के आस–पास लिखा गया है।

1.11 नाट्यशास्त्र में वर्णित पूर्वाचार्यो और प्राचीन ग्रन्थ

नाट्यशास्त्र के विविध विषय की विवेचनाओं में नाट्यशास्त्र के प्राचीन आचार्यों के नाम एवं प्राचीन ग्रंथो का वर्णन मिलता है– जैसे शिल्प के संदर्भ विश्वकर्मा, अर्थशास्त्र के संदर्भ में बृहस्पति, ध्रुवा और गन्धर्व के संदर्भ में नारद, अंगहार के संदर्भ में ताण्डू मुनि एवं ग्रंथों के संदर्भ में प्राणों एवं काम तंत्र जैसे ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। इन सारे आचार्यो से नाम से पता चलता है, कि यह सारे आचार्य नाट्यशास्त्र के पूर्व ई० सन् सदी के पूर्व थे। नाट्यशास्त्र में उल्लेखित काम तंत्र कशयन के काम शुत्र से अलग है, क्योंकि नाट्यशास्त्र

(1) पईजा के दिलीप कुमार / महानिबंद–भरत मुनि नाट्यशास्त्र मां नाट्य एवं नृत्यकला / पृ0–29

में नारियों की 24 श्रेणियों का वर्णन है। यह सारी बातों को ध्यान में रखते हुए निश्चित है, किन्तु नाट्यशास्त्र प्राचीन ग्रन्थ प्रतीत होता है,[1] किन्तु समय की निश्चितता प्राप्त नहीं है।

1.11.1 भरत मुनि के पूर्ववर्ती व समकालीन आचार्य

भरत से पूर्व का काल वेद काल माना जाता है। नाट्यशास्त्र के विषय में कई विद्वानों द्वारा व एतिहासिक ग्रंथकरों द्वारा चर्चा की गई है और इसे आदि देवों द्वारा दिए हुए ज्ञान से भरत द्वारा रचित ग्रन्थ माना जाता है। इस कारण इससे पूर्व के आचार्यों में गन्धर्वों के नाम आते है, जिनका उल्लेख इस प्रकार है–

1.11.1.1 ब्रह्मा और महादेव– सर्वप्रथम ब्रह्मा और महादेव को इस ग्रन्थ की रचना के पूर्व के रूप में देखते हैं। ब्रह्मा को उत्त्पति और महादेव को इस शास्त्र के प्रवर्तक मान सकते है।[2] कहा जाता है, कि देवों और असुरों के मध्य हुए युद्ध से शिथिल देवों को प्रसन्न करने के लिए नाट्य वेद की रचना हेतु उद्योग किया। यह तथ्य भी प्राप्त होता है कि ब्रह्मा ने ताण्डु से नाट्य की शिक्षा प्राप्त की, ताण्डु को भगवान शिव के शिष्य माने जाते है और भरत ने भी नाट्यशास्त्र की रचना में सर्वप्रथम ब्रह्मा और महादेव को सिर झुका कर नमस्कार किया है और कहा है कि–

प्रणम्य शिरसा देवौ पितामहमहेश्वरौ॥
नाट्यशास्त्रं प्रवक्ष्यामि ब्राह्मणा यदुदाहृतम॥[3]

अर्थात् मैं पितामह और महेश्वर को सिर झुका कर नमस्कार (प्रणाम) करता हूँ। जिनके द्वारा वेदों से नाट्यशास्त्र की रचना (निरूपण) करूँगा तथा नाट्य व संगीत के महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना हुई। इस प्रकार यह ब्रह्मा तथा महावेद के संयोजन से इस पवित्र तथा दिव्य ग्रन्थ की रचना का उद्योग हुआ।

1.11.1.2 नारद– नारद को आदि गन्धर्व माना जाता है। जिनका उल्लेख पुराण आदि में भी प्राप्त होता है। सांगितिक गन्धर्वों में सर्वप्रथम नाम भी नारद का ही मिलता है। नारद को ब्रह्मा का शिष्य माना जाता है और गान विद्या के मुख्य आचार्य के रूप में भी जाना जाता

(1) पईजा के दिलीप कुमार/महानिबंद–भरत मुनि नाट्यशास्त्र मां नाट्य एवं नृत्यकला/पृ0–28
(2) लाट, मुकुन्द/दत्तिल–दत्तिलम्/पृ0–3
(3)शास्त्री शुक्ल, बाबूलाल(अनुवाद)/भरत–नाट्यशास्त्र/अध्याय–1/श्लोक–1

है। जिनके एक हाथ में एक–तारा और दूसरे हाथ में करताल होती थी। जिसके द्वारा ही वह घूम–घूम कर गान करते थे। नाट्यशास्त्र के अनुसार भी नारद ब्रह्मा के शिष्य थे, जो कि गान तथा वाद्य दोनों ही संगीत से परिपूर्ण माने जाते है। इस क्रम में यदि नारद को नारदीय शिक्षा के रचयिता के रूप में देखा जाये, तो नारदीय शिक्षा भी एक अति प्राचीन ग्रन्थ माना जा सकता है।[(1)] इस प्रकार नारद को नाट्यशास्त्र के पूर्व का आचार्य माना जाता है।

1.11.1.3 स्वाति– स्वाति मुनि का नाम संगीत में एक महत्वपूर्ण अविष्कारक के रूप में लिया जाता है और स्वाति मुनि अद्वितीय भेंट संगीत को रही है। नाट्यशास्त्र में भी स्वाति मुनि का वर्णन प्राप्त होता है। एक प्रसंग में स्वाति मुनि की चर्चा इस प्रकार प्राप्त होती है, कि कमल की पंखुड़ी पर वर्षा की बूंद को सुनकर अवनद्ध वाद्यों का अविष्कार किया। नाट्यशास्त्र के अध्याय एक के श्लोक–50 से 52 में स्वाति और नारद को भरत की सहयता के लिए ब्रह्मा द्वारा समयादेश दिया गया था।[(2)] नारद का वर्णन गान के लिए व स्वाति मुनि का वर्णन वाद्य के लिए नाट्यशास्त्र में प्राप्त होता है। स्वाति नामक एक मुनि के विषय में वर्णन विष्णु पुराण में भी प्राप्त होता है, जो वाद्यों में पूर्णतः सिद्ध–हस्त थे। इस प्रकार पौराणिक रूप में भी स्वाति मुनि का वर्णन प्राप्त होता है। भरत के अनुसार नारद और स्वाति मुनि ब्रह्मा के शिष्य थे। इस कारण भरत के पूर्वाचार्यो में स्वाति मुनि का नाम उल्लेखनीय है। स्वाति मुनि का उल्लेख अन्य ग्रंथो से प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह माना जाता भरत को वाद्य की शिक्षा यही से प्राप्त हुई होगी।

1.11.1.4 तम्बुरु– तम्बुरु को संगीत की दृष्टि से एक प्रतिष्ठित आचार्य के रूप में देखा जाता है। तम्बुरु को स्वर वाद्य को ''तम्बूरे'' अर्थात् ''तानपुरे'' के अविष्कार के रूप में भी जाना जाता है। तम्बुरु मुनि का नाम किसी ग्रन्थ में प्राप्त नहीं होता है, परन्तु तम्बुरु को नंदी के समान ही भरत का समकालीन माना जाता है, और रेचक, अंगहार आदि प्रकरणों में भरत द्वारा तम्बुरु के विषय में चर्चा की गई है।

---

(1)शास्त्री शुक्ल, बाबूलाल(अनुवाद) / भरत–नाट्यशास्त्र / प्रस्तावना / पृ0–10
(2)शास्त्री शुक्ल, बाबूलाल(अनुवाद) / भरत–नाट्यशास्त्र / अध्याय–1 / श्लोक–50–52

1.11.1.5 नन्दी या नन्दिन– आचार्य नंदी के विषय में कई जानकारी नाट्यशास्त्र में कई स्थानों में प्राप्त होती है। नंदी को ''नन्दिन'' और ''नंदिकेश्वर'' के साथ–साथ ''ताण्डु'' का भी पर्याय माना गया है, क्योंकि भरत को ''तांडव नृत्य'' की शिक्षा नंदी से ही प्राप्त हुई थी। जिस कारण नंदी को ''ताण्डु'' भी कहा गया है। नृत्य सम्बन्धी प्रसंगों में भरत द्वारा इसकी चर्चा की गई है। नंदी को नाट्यशास्त्र के एक प्रमुख आचार्य के रूप में देखा जाता है। भरत द्वारा नंदी को ''महात्मा'' भी कहा गया है। नंदी को भगवान शिव का शिष्य माना जाता है। नंदी को भरत के पूर्व के आचार्य के रूप में भी जाना जाता हैं।

1.11.1.6 अगस्त्य– नाट्यशास्त्र के काशी संस्करण अंतर्गत अगस्त्य मुनि का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसमें यह वर्णन मिलता है, कि जब भरत द्वारा नाट्यशास्त्र का पाठ व विधान बताया जा रहा था, तब उसको सुननें वाले ऋषियों में अगस्त्य मुनि भी थे। ''तालसमुद्र'' नामक एक द्रविड़ भाषा के ग्रन्थ का उल्लेख प्राप्त होता है, जो कि अगस्त्य मुनि की रचना मानी जाती है। इस ग्रन्थ में ताल सम्बन्धी बृहद् वर्णन प्राप्त होता है, जो किसी अन्य ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलता है।

1.11.1.7 कश्यप– कोहल के समान कश्यप भी भरत के समकालीन माने जाते है। नाट्यशास्त्र के अंतर्गत कई स्थानों पर कश्यप ऋषि क उल्लेख प्राप्त होता है, जिस कारण कश्यप को नाट्यशास्त्र के एक संगीताचार्य के रूप में देखा जाता है। अभिनव गुप्त के द्वारा भी नाट्यशास्त्र के संदर्भ में कई स्थानों पर कश्यप ऋषि के उदाहरण प्रस्तुत किए है। रस संबन्धित प्रसंगों के अंतर्गत कश्यप के मतों को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। काशी विश्वविद्यालय संस्कारण के नाट्यशास्त्र के अंतर्गत कश्यप को भरत के पूर्व के आचार्यों मे दर्शाया गया है[(1)] और बाबूलाल शुक्ल शास्त्री द्वारा भी पूर्व का ही समय कश्यप ऋषि के लिए बताया गया है।

1.11.1.8 दत्तिल– कुछ मतों व नाट्यशास्त्र के पाठ से ज्ञात होता है, कि दत्तिल भरत के पुत्र थे। दत्तिल को गन्धर्वशास्त्र को संक्षिप्त में प्रस्तुत करने वाला बताया गया है। दत्तिल को एक महान ग्रन्थकार के रूप में भी देखा जाता है। इनकी प्रमुख रचना दत्तिलम मानी है।

---

(1) शर्मा, महारानी / भारतीय संगीत–शास्त्र में भरत का योगदान / पृ०–22

अभिनव गुप्त द्वारा 28 वें अध्याय की जो व्याख्या प्राप्त होती है, उसमे भी दत्तिल का नाम उल्लेखनीय माना जाता है।

1.11.1.9 कोहल– कोहल को नाट्यशास्त्र के अंतिम अध्याय में भरत मुनि का उत्तराधिकारी बताया गया है, परन्तु कुछ विद्वानों का यह भी मत है, कि कोहल भरत से अलग स्वतंत्र आचार्य थे। कई ग्रंथो आदि में भरत के सौ पुत्रों में कोहल का नाम उल्लेखनीय है। इस कारण कोहल के विषय में अलग–अलग ग्रंथो में वर्णन मिलता है, परन्तु इन सभी ग्रंथो के आधार पर यह बात सिद्ध होती है, कि कोहल नाट्य के एक उच्च कोटि के विद्वान थे, जिस कारण इनका नाम नाट्याचार्य के रूप में मिलता है। और इनका काल भारत के समय का ही माना जाता है।

कोहलादिभिरेवं तु वातस्य–शाण्डिल्या धूर्तिले॥ (1)

इस प्रकार नाट्यशास्त्र में कोहल के विषय में वर्णन प्राप्त होता है।

1.11.1.10 अश्मचुट्ट तथा नखकुट्ट– कोहल, दत्तिल के समान अश्मचुट्ट और नखचुट्ट का भी उल्लेख भरतमुनि के पुत्र के रूप में मिलता है। जिसका वर्णन नाट्यलक्षण रत्नकोष नामक सागरनन्दी के ग्रन्थ में भी वर्णित किया गया है, कि नाट्य प्रकरणों में इन आचार्यो के मतों को बताया गया है।

1.11.1.11 बादरायण तथा शातकर्णी– भरत के सौ पुत्रों में वादरायण और शातकर्णी का नाम भी मिलता है और नाट्यलक्षण रत्नकोष में भी दोनों का उल्लेख मिलता है, जिससे ज्ञात होता है, कि यह दोनों नाट्यशास्त्र के ही आचार्य थे।

इस प्रकार कोहल, दत्तिल, कश्यप, अश्मचुट्ट, नखकुट्ट, वादरायण, शातकर्णी के अतिरिक्त वातस्य और शाण्डिल का नाम भी भरत के पुत्रों के रूप में वर्णन मिलता है। यह सभी प्रमाणिक तौर पर ग्रन्थकार, संगीताचार्य व नाट्य विधान को जानने वाले थे। यह कहा जा सकता है कि नाट्यशास्त्र की रचना में इन सभी ने प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह किया है। नाट्यशास्त्र के मध्यकालीन आचार्यों में विशाखिल, चारायण, कात्यायन, राहुल, गर्ग, शकलिगर्भ, घण्टक, नाट्यवार्तिककार हर्ष, मातृगुप्ताचार्य एवं सुबंधु नाम उल्लेखनीय हैं। इन सभी के

---

(1) अभिनव गुप्त/अभिनव भारती टीका भरत–नाट्यशास्त्र/अध्याय–37/श्लोक–24

विषय में आचार्य अभिनवगुप्त द्वारा व्याख्या प्रस्तुत किया गया हैं। सभी आचार्यों का काल नाट्यशास्त्र के मध्य का माना जाता हैं। साथ ही नाट्य व संगीत के आचार्य माने गये हैं।

निष्कर्ष– शोधार्थी द्वारा इस अध्याय के सभी तथ्यों का अध्ययन एवं सभी धारणाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं, महर्षि भरत ऐसे महान पुरुष थे, जिनके विषय में जानने की चेष्टा विद्वानों द्वारा सदियों से होती आ रही है, शोधार्थी द्वारा भरत मुनि के परिचय के लिए कई ग्रन्थों का अध्ययन करने के पश्चात् यह प्रतीत होता है, कि भरत मुनि नाट्यशास्त्र के प्रणेता थे। भरत मुनि ने ब्रह्मा जी के आशीर्वाद से नाट्यशास्त्र की सफल रचना की। भरत मुनि के विषय मे शास्त्रकारों के अलग–अलग मत मिलते है, जिसमें विद्वानों द्वारा अनेकों भरत की चर्चा की गई है, तथा दूसरी ओर कुछ शास्त्रकारों द्वारा भरत को एक जाति मानते हुए, उल्लेख करते है कि एक वंश परंपरा के आधार पर नाट्यशास्त्र की रचना की है। ऐसा मानते है, परंतु कई ग्रन्थों एवं भरतमुनि के पूर्वर्ती तथा परवर्ती शास्त्रकारों के शास्त्रों के अध्ययनसे यह स्पष्ट होता है कि भरत एक ही थे और उन्होनें ही नाट्यशास्त्र की रचना की। इसी अध्याय के अंतर्गत नाट्यशास्त्र का रचना काल बताते हुए। शोधार्थी द्वारा सभी तथ्यों पर अध्ययनकरने पर निष्कर्ष निकलता है, कि भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र तीसरी शताब्दी पूर्व भरत नाट्यशास्त्र के रूप प्रसिद्ध हो चुके था। अश्वघोष की रचनाओं पर नाट्यशास्त्र का प्रभाव देखने को मिलता है। अश्वघोष ने अपनी कृति सारीपुत्र प्रकरण का समय प्रथम शताब्दी का माना जाता है, अर्थात् नाट्यशास्त्र की रचना प्रथम शताब्दी से पूर्व या प्रथम शताब्दी के पूर्वार्ध प्रतीत होता है। शोधार्थी द्वारा सारे ग्रंथों एवं तार्किक अभ्यास से प्रतीत होता है, कि नाट्यशास्त्र प्राचीन ग्रन्थ है, एवं उसे पहली शतब्दी के आस–पास लिखा गया है।

****